INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

Certificate of Publication

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

Dr. Anjana Rani

In recognition of the publication of the paper entitled

PUNJAB PRANT KA LOKGEET SANGEET VA USME NIHIT LOKGITO KA ADHAYAN

Published In IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved - Journal No : 43602 & 7.17 Impact Factor

Volume 10 Issue 2 April 2023, Date of Publication: 26-April-2023

PAPER ID : IJRAR23B2107

Registration ID : 264452

R.B.Joshi

EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool) , Multidisciplinary, Monthly Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.ijrar.org | Email: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

Manage By: IJPUBLICATION Website: www.ijrar.org | Email ID: editor@ijrar.org

IJRAR | E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंजाब प्रांत का लोक संगीत व उसमे नीहित लोकगीतों का अध्ययन

डा0 अंजना रानी, ऐसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन

राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल

लोक शब्द वास्तव में अंग्रेजी के **'फोक'** का पर्यायवाची है, जो नगर तथा ग्राम की समस्त साधारण जनता का द्योतक हैं।

यजुर्वेद में **'लोक'** की कल्पना, विराट रूप में की गई है। लोक, पुरुष रूप ईश्वर है। उसके सहस्त्रों मुख, नेत्र और पद हैं। लोक नामी यही विराट पुरूष, अनेक रूपों में इस ब्रह्मांड में व्याप्त है।[1]

हिन्दी काव्य में लोक शब्द वेद से भी भिन्न स्थिति में प्रकट हुआ है परंतु जिस अर्थ में लोक शब्द को गौरवपूर्ण पद प्राप्त हुआ है, वह आधुनिक है। [2]

'लोक' हमारे जीवन का महासमुद्र है। इसमें भूत, भविष्य तथा वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। प्राचीनकाल से लोक शब्द का प्रयोग साधारण जनता के अर्थ में होता आ रहा है।[3]

अतः यह कहा जा सकता है कि लोक में समस्त सृष्टि निहित है। वह किसी विशिष्ट वर्ग अथवा जाति का सूचक शब्द नहीं है, बल्कि अपने आपमें समस्त संस्कृति का प्रतिनिधित्व समाहित किए हुए है। इससे सिद्ध होता है कि लोक शब्द में ग्रामीण तथा नागरिक जीवन का सुन्दर समन्वय हुआ है। यह हमारी सभ्यता संस्कृति का इतिहास है।[4]

लोक संगीत

लोक संगीत का जन्म व्यक्ति के नैतिक मूल्यों, रीति रिवाजों, सामाजिक उत्सव त्यौहारों एवं सामूहिक कार्यों 'द्वारा ही हुआ है और इन्हीं के द्वारा अनेक प्रकार के लोकगीत और धुनों का निर्माण होता है जो समस्त मानव समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है।[5]

लोक संगीत का उद्भव कब हुआ तथा कैसे हुआ। इसकी प्राचीनता के संबंध में अनुमान लगाना न केवल कठिन हैं, अपितु असंभव भी है। लोक संगीत का इतिहास इतना प्राचीन है जितना मानव सृष्टि का । अतः यह कहा जा सकता है मानव सृष्टि की रचना के साथ ही लोक संगीत का उद्भव हुआ होगा। मनुष्य ने अपने भावों को व्यक्त करने का माध्यम, सर्वप्रथम संगीत को ही बनाया होगा, ऐसा अनुमानित है।[6]

लोक संगीत का अर्थ जनसाधारण, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित संगीत से है। यह जनसाधारण का इतिहास है, जिसमें भारतीय संगीत का सच्चा दर्शन मिलता है। पं0 ओंकारनाथ ठाकुर के अनुसार देशी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि लोक संगीत ही है।[7]

लोक संगीत लोक रंजन एवं जन साधारण की आंतरिक भावनाओं का प्रतीक है। सरल, भाषा, सरल काव्य, एवं सरल धुनो से आबद्ध इस संगीत में किसी व्याकरण अथवा शास्त्र के नियंत्रण की आवश्यकता नहीं होती वरन यह प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप से ही स्वयं प्रस्फुटित होता है।[8]

पंजाब का लोक संगीत

पंजाब शब्द, पंज तथा आब, इन दो शब्दों के मेल से बना है। ये दोनो फारसी भाषा के शब्द है। पंज का अर्थ है –पांच तथा आब का अर्थ है जल। अर्थात पाँच नदियों का पानी! पंजाब प्रदेश में पांच नदियां प्रवाहित होती है – जेहलम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज । महाकाव्यों और पुराणों में पंजाब को पंचनद भी कहा गया है।[9]

1947 का पंजाब, जो पंच नदी का महान प्रदेश था, आज खंडित होकर कई भागों में विभाजित हो गया है। तब पेशावर से लेकर दिल्ली, दूसरी ओर कश्मीर से लेकर राजस्थान की सीमा तक पंजाब की भुजाएं फैली हुई थी। परंतु समय ने पहले इसे दो खण्डो में बांटा–एक भारत का पंजाब तो दूसरा पाकिस्तान कहलाया । भारत के उस आधे पंजाब के भी अब तीन खण्ड बन चुके हैं – पंजाब, हिमाचल और हरियाणा।

लोक संगीत में जन साधारण का हृदय बोलता है, किसी भी प्रान्त का लोक संगीत उस प्रान्त की सभ्यता का प्रतिबिम्ब होता है। पंजाब के लोक संगीत पर भी इस धरा के भौगोलिक ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों' का प्रभाव देखने को मिलता है। यहां का लोक संगीत, जीवन के सहज भाव से उपजा है इसमें सीधी – 2 तर्ज और लय के विभिन्न रूपों का समावेश है। जीवन की स्वाभाविक क्रियाए जैसे – चक्की की लय, चरखों की ध्वनि, पानी देने वाली रेहट की टीं टीं, बैलगाड़ी के चलने पर बैलों के गले मे बंधी घंटियों की आवाज, पंजाब के वातावरण में संगीतमय रस घोलती रहती है।[10]

भारत का प्रत्येक प्रांत अपने विशिष्ट लोक संगीत मे धनी हैं लेकिन पंजाब प्रांत का लोक संगीत अपनी विशेषताओं के कारण स्मरूत भारत के गले का हार बना हुआ है। सुख सुविधाओं से सम्मपन्न यहां की जनता, लोक कलाओं का निरंतर विकास करती आ रही हैं। यहां के बहुरंगी जीवन का सच्चा इतिहास, उसका सामाजिक नैतिक आदर्श, लोक संगीत, मे सुरक्षित रहकर अपनी अनूठी छटा, लोकगीतों, नाट्यों गाथाओं व नृत्यों के माध्यम से विकासशील रहा है। जीवन का कोई भी प्रसंग अथवा क्षेत्र ऐसा नहीं है जिससे संबंधित लोक संगीत यहां पर उपलब्ध न हो तथा, कोई की ऐसा कर्म नहीं जिसकी अभिव्यंजना लोक नाट्यो, गाथाओं में न हो।[11]

पंजाब के लोक संगीत में यहां की संस्कृति का अनूठा चित्र उपलब्ध होता है। प्रेम व श्रम की भावना से परिपूर्ण यहा के लोकगीतों का अपना एक विशेष आकर्षण है। इन गीतों में ग्रामीणों की आशाएं, अकांक्षाएं, प्रेम खुशी और रंजकता इत्यादि सभी कुछ मिलता है।[12]

पंजाब के लोकगीत

पंजाब आज भी लोक गीतों मे धनी प्रदेश है। भारत के किसी भी प्रदेश में इतनी संख्या मे प्रेमगाथाएं, और धार्मिक तथा अन्य विषयों से संबंधित गीत नहीं पाए जाते जितने की पंजाब देश में मिलते है। भारत के किसी भी कोने में हीर की धुन गुनगुना दी जाए तो श्रोता भाव विभोर हो उठता है। इस तरह से पंजाब की हीर, महिया, मिर्जा, आदि धुनें पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं!

पंजाब की संस्कृति पर सूकी परंपरा का बहुत प्रभाव पड़ा। यहां की लोक गाथाओं में सोहनी महिवाल, मिर्जा–साहिबा, सस्सी पुन्नु तथा हीर रांझा की कथाएं, लोकगीतों के माध्यम से लोक संगीत में मुखरित होती है।

अन्य भाषाओं के लोकगीतों की भांति पंजाब के लोक– गीतों को भी दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. मुक्तक लोकगीत
2. प्रबंधात्मक लोकगीत

मुक्तक लोक गीतों को भी निम्न भागों में बांटा जा सकता है –

(i) समय चक्र से संबंधित लोक गीत

(ii) संस्कार संबंधित लोक गीत

(iii) स्फुट लोक गीत [13]

समय चक्र से संबधित गीत

इसके अन्तर्ग पंजाब के पर्वो त्योहारों और ऋतुओं से संबंधित गीत आते है ऋतु संबंधित पंजाबी लोक गीतों में बारहमाहा गीतों के अन्तर्गत भी रचनाए पायी जाती है। बारहमाहा गीतों में 12 महिनों की विशेष प्राकृतिक छटा, उसके ताप तथा मानव मन पर पडने वाले प्रभाव आदि का निरूपण किया जाता है। [14]

बारहमाहा गीत

जान्दे सिपाही नूं तूं रोक लैं
चेतर न जाईये भल जी देवी मना
बैसाख, वैसाखी दे लट घो राहीं
जेठ न जावीं जी मैं तपण तंदूर
हाड़ दिया धुप्पो वे लाल डंडियां। [15]

....

त्यौहार, पर्वों से संबंधित गीतों में, बैसाखी, लोहड़ी, तीज, सकरांत, होली, दीवाली इत्यादि सम्मिलित होते हैं. –

लोहड़ी गीत – सुंदर मुंदरिये हो, तेरा
कोण विचारा हों
बैसाखी गीत –
हरियां हरना बागी चरना
बागी फिरे लुकाई
भंगड़ा पा मुंडया
अज बैसाखी आई। [16]

संस्कार संबंधित लोकगीत – भारत के सभी प्रान्तों में पाय: प्रत्येक धर्म, जाति, वर्ग के अपने विशेष संस्कार होते हैं जो सामूहिक रूप में मनाए जाते हैं। यह संस्कार मानव जीवन के जन्म–मरण के बीच में उपस्थित विभिन्न आयामों के साथ जुड़े होते हैं। इसमे जन्म, विवाह तथा मृत्यु से संबंधित गीत सम्मिलित होते हैं।[17]

पंजाब में बेटी के जन्म पर भी गीत गाए जाते है परंतु उन गीतों में उदासी का भाव सम्मिलित होता है जैसे–

कोठे ऊपर कोठड़ा उत्ते अंब दा बूटा जी
खबर करो बीबी दे बाबे नूं, घर पोती
जम्मी जी !

पुत्र जन्म पर पंजाब प्रदेश मे भी हरियाणा प्रदेश की भांति खुशियां मनाई जाती है और खुशी के गीत गाए जाते है।[18] जैसे –

घर नन्द के मिलण वदाइया जी घर नंद दे
अद्‌दी रात मेरा गोबिन्द जमिया, जगविच
धुम्मां पाइयां ।''

विवाह– यह संस्कार लोक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। प्रत्येक प्रदेश में सभी वर्गों में यह संस्कार समान रूप से मनाया जाता है। विवाह के अवसर पर अनेक रस्में पंजाब में की जाती हैं, जिनसे संबंधित विभिन्न लोक गीत पंजाब प्रदेश मे गाए जाते हैं। जिसके अन्तर्गत सुहाग गीत, बटणे के गीत, सिट्ठनियां, छंद, घोडियां, विदाई गीत इत्यादि सम्मिल होते हैं।[19]

सुहाग गीत	–	मत्थे ते चमकण वाल, मेरे बनडे दें
घोडियां	–	उठनी खेल घोडी, बाबे वेहडे जा
छंद	–	छंद परागे आइये जाइये, छन्द परागे बालियाँ सोने दा मै महल चिणांवां विच बिठांवा सालियां
विदाई गीत	–	साडा चिड़ियां दा चंबा वे, बाबल अस्सां उड़ जाणा ।
सिट्ठणियां	–	कुड़ी तां साडीतीले दी तार ए मुंडा तां दिसदा कोई घुमियार ए जोडी तां फबदी नई.................. ।[20]

मृत्यु से संबंधित गीतु

मनुष्य के जीवन का अंत होने पर पंजाबी सभ्याचार में गाए जाने वाले गीतों को अलाहणे और वैण कहते है इन गीतों के शब्द ऐसे होते हैं जिनको सुनकर शोक संतृप्त परिवार को सांत्वना मिलती है। अकेली स्त्री द्वारा गाया जाने वाला गीत वैण तथा सामूहिक रूप मे स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले गीत को अलाहणे कहते हैं।[21]

वैण

तैनूं मौत पुछेंदी आई धीए–हाए धीए

तेरा बैठी पावां मुल्ल धीए हाए धीए ।[22]

स्फुट गीत

पंजाब के ये लोकगीत किसी भी विशेष श्रेणी के अन्तर्गत नहीं आते! पंजाब के जनजीवन से संबंधित यह गीत प्रेम अथवा जीवन के प्रति अनुरक्ति आदि विषयों से जुड़े हुए हैं इसके अन्तर्गत टप्पा, माहिया, बोलियां, ढोला, जिन्दुआ, किकली, जुगनी, हासिंगार के गीत इत्यादि होते हैं। [23]

टप्पा – यह लोक विधा मियांशोरी द्वारा अविष्कृत उपशास्त्रीय टप्पे से भिन्न है और कंही अधिक प्राचीन है। पंजाब के टप्पों में श्रृंगार रस की प्रधानता अधिक रहती है। टप्पे में प्रेम मिलन की उत्कंठा, वियोग अनुभूति की अभिव्यक्ति, प्रिय के रूप वर्णन आदि की अपेक्षा हास–परिहास और व्यग्य विनोद की बातें अधिक होती हैं। टप्पों को युगल गीत के रूप में गाने की प्रथा है। सवाल जवाब के रूप में एक दूसरे के प्रति कटाक्ष और ‘छींटाकशी की जाती है.

जैसे– गड्डी चलदी ए लीका ते

अगे माही नित मिलदा,

हुंण मिलदा तरीकां ते।[24]

माहिया – यह टप्पे का ही एक प्रकार है माहिया – बालो नामक एक प्रेम कथा में बालो नामक युवती, अपने प्रेमी को माहिया कह कर पुकारती थी। अतः इसी आधार पर इस प्रेम कथा से संबंधित लोक गीत को माहिया कह कर पुकारा जाने लगा।[25]

ढोला – इस लोक गीत का मूल विषय सौंदर्य यौवन और प्रेम ही होता है। माहिया से मिलते जुलते इस गीत प्रकार की विशेषता केवल यही है कि इस लोक गीत की तीसरी पंक्ति में ढोल शब्द का आना आवश्यक है। ढोला शब्द का प्रयोग प्रेमी के अर्थ में किया जाता है, जैसे –

बजार विकदियां छुरियां

इक्के दियां चांटां बुरियां, लगन तां जाणे जी ढोला।[26]

बोलियां – बोलियों का पंजाबी लोक संगीत में सर्वाधिक बड़ा क्षेत्र है यदि यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। पंजाबी नृत्य, गिद्दे का उठान, बोलियों से ही होता है। गिद्दा, भांगड़ा लोक नृत्यों का बोलियों से गहरा संबंध है। [27]

प्रबंधात्मक लोक गीत

पंजाबी भाषा के लोक साहित्य मे दो प्रकार के प्रबंध काव्य मिलते हैं एक प्रकार तो ऐतिहासिक पुरुषों के चरित अथवा उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित होता है और दूसरा दन्त कथाओं पर आधारित होते हैं। इस आधार पर पंजाबी प्रबंध काव्य साहित्य को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है–

(i) वीर रस (एतिहासिक पुरुषों के जीवन की घटनाओं से संबंधित गीत)

(ii) प्रेम काव्य (दन्त कथाओं से संबंधित गीत)

(i) **वीर रस** से संबंधित लोकगीतों का साहित्य दो रूपों में लिखा गया वार और जंगनामा । वार का शाब्दिक अर्थ शस्त्र से आघात पहुंचाना है। पंजाब अंचल के संगीत में वार गायन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वार, वीर रस प्रधान

होते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित 22 वारों को रागबद्ध रूप में गाने का निर्देश है। इसके विपरीत जंगनागा, वार के समान गेय नहीं हैं।[28]

गुरू गोबिन्द सिंह जी के दरबार ढाढ़ी गायक, नत्था और अब्दुल्ला थे। दोनो भाई साथ–साथ योद्धाओं की वारे गाते थे।

नत्था ढड्ड बजाइआ, अब्दुल्ला हथ रबाबा
अब्दुल्ला ढाड़ी जस सुनाए।[29]

(ii) **प्रेम काव्य**

इस प्रकार के काव्यों में प्रेम कथाओं का विशेष स्थान है जिसके अन्तर्गत हीर–रांझा, सोहनी–महिवाल, सस्सी– पुन्नूं, मिर्जा – साहिबा, के प्रेम की गाथाओं के गीत सम्मिलित होते हैं। ये प्रेम काव्य अपनी आकर्षक लोक धुनों के कारण पंजाब में ही नहीं, अपितु अन्य प्रांतों में भी लोकप्रिय हैं। इन प्रेम कथाओं के गायन में शास्त्रीय संगीत के रागों की स्वर संगतियां और लय–बढ़ता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

पंजाब प्रांत के लोक संगीत के प्रति यहां की जनता का इतना ब्यापक आकर्षण है कि शास्त्रीय संगीत गायकों की अपेक्षा लोकगीत गायकों का महत्व कहीं अधिक है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए वर्तमान युग के प्रसिद्धि प्राप्त लोक संगीत गायकों के नामों का उल्लेख करना उपयुक्त होगा। पिछली पिढ़ी के गायकों में लालचन्द, जमला जट का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुविख्यात लोक गायिका नरिन्दर बीबा इन्ही की शिष्या हैं। वर्तमान पीढ़ी के कलाकारो में आसासिंह मस्ताना, सुरिन्द. कौर, नरीन्दर कौर, प्रकाश कौर, महिन्दर कौर, जगत सिंह, जग्गा, पूरन शाह कोटि, मास्टर सलीम, परमजीत पम्मी, गुरदास मान, इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।[30]

उपरोक्त विवरण द्वारा यह कहा जा सकता है कि पंजाब प्रदेश का लोकसंगीत अत्यधिक समृद्ध और व्यापक है। यहां के लोकसंगीत में नीहित लोकगीतों की भरमार है। यदि यह कहा जाए कि पंजाब प्रदेश में लोक नृत्यों और लोक

वाद्यों से अधिक, लोकगीतों की संख्या है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। कुछ लोक गायकों के द्वारा पंजाबी लोक गीतों को राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई हैं जिनमें हंसराज हंस, गुरदास मान, सरदूल सिकंदर, सुखविन्दर सिंह, इत्यादि के नाम प्रमुख हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा0 लोकेश शर्मा, स्वाती शर्मा, संगीत सरिता, पृ0 155
2. लक्ष्मीनारायण गर्ग, निबंध संगीत पृ0 74
3. डा0 मुकेश, हरियाणा और पंजाब का लोक संगीत, तुलनात्मक अध्ययन, पृ0 36
4. डा0 लोकेश शर्मा, स्वाती शर्मा, संगीत सरिता, पृ0 155
5. डा0 मुकेश, हरियाणा और पंजाब का लोक संगीत तुल्नात्मक अध्ययन, पृ0 36
6. डा0 जयसिंह, हरियाणा लोक संगीत, एक अध्ययन, पृ0 38
7. सीमा जौहरी, संगीतायन, पृ0 06
8. रीता धनकर, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, पृ0 30
9. गीता पैन्तल, पंजाब की संगीत परंपरा, पृ0 03
10. डा0 अरविन्द शर्मा, पंजाब का लोक संगीत, पृ0 07
11. डा0 मुकेश, हरि० और पं० का लोक संगीत, तुल्नात्मक अध्ययन, पृ0 58
12. वही पृष्ठ 26
13. डा० भैरवी, पंजाब की वादन संगीत परंपरा, पृ0 15
14. गीता पैन्तल, पंजाब की संगीत परंपरा, पृ० 29
15. डा0 अरविन्द शर्मा, पंजाब का लोक संगीत, पृ० 17—18
16. डा0 मुकेश, हरि० और पं० का लोक संगीत, तुल्नात्मक अध्ययन, पृ0 118
17. गीता पैन्तल, पंजाब की संगीत परंपरा, पृ० 29
18. डा0 मुकेश, हरियाणा और पं० का लोक संगीत, तुलनात्मक अध्ययन, पृ0 64
19. गीता पैन्तल, पंजाब की संगीत परंपरा, पृ0 31
20. वही पृ० 32

21.वहीं पृ० 33

22.डा० गुरनाम सिंह, पंजाबी लोक संगीत सिद्धांत, पृ० 60

23.रीता धनकर, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, पृ0 115

24.गीता पैन्तल, पंजाब की संगीत परंपरा, पृ० 34

25.रीता धनकर, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, पृ० 116

26.वही पृष्ठ 116 – 117

27.डा0 अरविन्द शर्मा, पंजाब का लोक संगीत, पृष्ठ 41

28.गीता पैन्तल, पंजाब की संगीत परंपरा पृ0 37–39

29.वही पृ0 41

30.वही पृ0 41